Changing Ways
बदलती राहें
(साप्ताहिक)

वर्ष 01, अंक 06, पृष्ठ : 04 मूल्य - 4 रूपये धर्मशाला, 15 फरवरी 2016 हर सोमवार को प्रकाशित

धर्मशाला पहुंची टी-20 वर्ल्ड कप ट्राफी

धर्मशाला। भारत में टी-20 वर्ल्ड कप का रोमांच अभी से शुरू हो गया है। इस वर्ल्ड कप के मेजबान शहरों में से एक धर्मशाला में आईसीसी टी-20 वर्ल्ड कप की महिला व पुरुष वर्ग की ट्राफियां स्वच्छता के संदेश के साथ लांच की गईं। इंटरनेशल क्रिकेट काउंसिल के क्रिकेट फॉर गुड एवं युनिसेफ ने बीसीसीआई के साथ साझेदारी में आईसीसी वर्ल्ड टी-20 के मेजबान शहर धर्मशाला के दौरे के दौरान टीम स्वच्छ क्लिनिकों की लांचिंग की। भारत को खुले में शौच की समस्या से छुटकारा दिलाने तथा देश भर में सेनिटेशन एवं शौचालयों के इस्तेमाल को बढ़ावा देने के लिए यह खास पहल की गई है।

आईसीसी डब्ल्यूटी-20 मैन्स एवं वुमेन्स ट्रॉफियां निस्सान ट्रॉफी टूर फ्लोट पर धर्मशाला के खूबसूरत शहर में पहुंचीं। जहां उत्साही प्रशंसकों को आईसीसी डब्ल्यूटी 20 ट्रॉफियों के साथ अपनी तस्वीरें लेने का मौका मिला। खास तौर पर डिज़ाइन की गई एक डबल-डेकर बस बच्चों को एक स्थानीय एनजीओ से लेकर गई। स्थानीय हीरो ऋषि धवन ने अपने प्रशंसकों के साथ बातचीत की। बच्चों के साथ क्रिकेट खेलते हुए, ऋषि धवन ने बच्चों के साथ क्रिकेट के टिप्स सांझा किए और उन्हें हाइजीन एवं सेनिटेशन (यानि साफ-सफाई) के महत्व के बारे में बताया। बच्चों को स्टेडियम में खास तौर पर बनाए गए टीम स्वच्छ वॉश क्लिनिकों के बारे में बताया गया।

इस पहल को सेनिटेशन के लिए सामाजिक आंदोलन का नाम देते हुए युनिसेफ इंडिया में चीफ ऑफ कम्युनिकेशन मिस कैरोलीन डेन डल्क ने बताया, टीम स्वच्छ पहल टीम एवं खेल का मूल दृष्टिकोण है। इस पहल के माध्यम से हम लोगों में खेल के प्रति जुनून का फायदा उठाते हुए देश में शौचालय के इस्तेमाल को बढ़ावा देने तथा बच्चों के जीवन को बचाने हेतू प्रयासरत हैं।

ब्यास पुल के निकट ढांक से टकराई बस

देहरागोपीपुर (कांगड़ा)। देहरा के ब्यास पुल के निकट धर्मशाला डिपो की बस में बैठे यात्री बाल-बाल बच गए। होशियारपुर से धर्मशाला आ रही बस करीब साढ़े पांच ब्यास पुल से पहले स्टेरिंग जाम होने से ढांक से टकरा गई। जिससे बड़ा हादसा होने से टल गया। बस में करीब ३५ से ४० सवारियां बैठी हुईं थी। बस में बैठे यात्री डिंपल का कहना है कि यदि बस में यह खराबी करीब २०० मीटर आगे पुल पर होती तो बड़ा हादसा हो सकता था। प्रत्यक्षदर्शी नीटू वालिया के अनुसार वह कार से जा रहे थे तो उनके सामने बस ढांक से टकरा गई। यात्रियों को आपातकालीन दरवाजे से निकाला गया। सवारियों का कहना था कि निगम को लंबे रूटों पर ठीक बसें भेजनी चाहिए।

सऊदी में फंसा ऊना का युवक, पासपोर्ट जब्त

ऊना। विदेश में काम कर ज्यादा पैसे कमाने की ललक भारतीय युवाओं को महंगी पड़ रही है। ऊना जिले का एक युवक सऊदी अरब में कंपनी के मालिकों की कथित प्रताड़ना का शिकार हो गया है। वह पल-पल वतन वापसी की राह देख रहा है, लेकिन कंपनी के मालिक ने उसका पासपोर्ट, वीजा और आईकार्ड समेत अन्य दस्तावेज जब्त कर लिए हैं। यहां तक कि युवक को पिछले छह माह से तनख्वाह जारी नहीं की गई है। उत्तर प्रदेश के दो अन्य युवक भी उक्त कंपनी की प्रताड़ना के शिकार हुए हैं, जो अपने देश लौटने के इंतजार में हैं। दौलतपुर के पिरथीपुर का रहने वाला उमेश कुमार पुत्र देसराज पिछले करीब साढ़े तीन सालों से सऊदी अरब के रियाद में एक स्थानीय कंपनी में बतौर मशीन ऑपरेटर कार्यरत है। उमेश ने अमर उजाला से फोन पर संपर्क कर दुखड़ा सुनाते हुए कहा कि इतने वर्षों में उसे एक बार भी छुट्टी नहीं दी गई। जब उसने इस बाबत कंपनी मालिक से बात की तो उसके साथ मारपीट शुरू कर दी गई और छह महीने से उसकी तनख्वाह भी रोक दी है। उमेश ने बताया कि वह उसके चंगुल से जैसे-तैसे बचकर भारतीय दूतावास गया, लेकिन वहां भी उसकी किसी तरह की मदद नहीं की गई। उसके बाद उक्त कंपनी के मालिक ने उस पर झूठे इल्जाम लगाकर एक महीने के लिए जेल भिजवा दिया। बुरी तरह से बदहवास हो चुके उमेश कुमार ने भारत सरकार और हिमाचल प्रदेश सरकार से उसे अपने वतन वापस भेजने की गुहार लगाई है। उमेश ने बताया कि उक्त कंपनी में पहले करीब एक दर्जन लोग काम करते थे, जो समय रहते कंपनी से बाहर निकल गए।

मंडी में भर्ती होंगे 175 पुरुष व 44 महिला कांस्टेबल

मंडी। पुलिस में भर्ती होने की इच्छा रखने वाले लड़कों व लड़कियों का इंतजार जल्द ही खत्म होने वाला है। जिला मंडी में 175 पुरुष व 44 महिला कांस्टेबल की भर्ती के लिए पुलिस विभाग ने आवेदन आमंत्रित किए हैं। 219 पदों को भरने के लिए उम्मीदवार 15 मार्च से पहले आवेदन कर सकते हैं। पुलिस अधीक्षक कार्यालय मंडी में 15 मार्च तक डाक व खुद पहुँच कर आवेदन किया जा सकता है। आप को बता दे की 97 पद सामान्य वर्ग से भरे जाएंगे। अनुसूचित जाति के 38 पद, अनुसूचित जनजाति के आठ पद अन्य पिछड़ा वर्ग के उम्मीदवारों के 32 पद भरे जाएंगे। वहीं पुरषों के साथ-साथ 44 पद महिला कांस्टेबल के भी भरे जाएंगे। सामान्य वर्ग के 24 पद भरे जाएंगे। अनुसूचित जाति लिए नौ पद, अनुसूचित जनजाति के उम्मीदवार के लिए दो पद अन्य पिछड़ा वर्ग के उम्मीदवारों के भी आठ पद भरे जाएंगे।

पुरुष कांस्टेबल व महिला कांस्टेबल के पद के लिए शैक्षणिक योग्यता सामान्य वर्ग के उम्मीदवार की आयु 18 से 23 साल के बीच होनी चाहिए। जमा दो पास होना आवश्यक है। अनुसूचित जाति जनजाति वर्ग तथा अन्य पिछड़ा वर्ग के उम्मीदवार जमा दो उत्तीर्ण होने के साथ साथ उनकी आयु 18 से 25 साल तक होनी चाहिए। लिखित परीक्षा के साथ-साथ शारीरिक दक्षता परीक्षण टेस्ट से भी उम्मीदवारों को गुजरना होगा। पुरुष व महिला वर्ग के उम्मीदवारों को 1500 व 800 मीटर दौड़, उंची कूद व लंबी कूद की बाधा भी पार करनी होगी।

राशनकार्ड के लिए जरूरी नहीं आधार नंबर:बाली

शिमला। खाद्य, नागरिक आपूर्ति एंव उपभोक्ता मामले मंत्री जीएस बाली ने कहा कि डिजिटल राशनकार्ड परियोजना सार्वजनिक वितरण प्रणाली में एक बड़े सुधार की प्रक्रिया है। यह केंद्र और राज्य सरकारों की समान रूप से प्रायोजित योजना है। वर्तमान में, प्रदेश भर के उपभोक्ताओं को विभाग द्वारा डिजिटाईज्ड विवरण को सत्यापित करने का आग्रह किया गया है।

उन्होंने कहा कि प्रत्येक घर से बैंक खाते का ब्यौरा एकत्र किया जा रहा है तथा अतिरिक्त विवरण एकत्र करने की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण कदम है, जिसकी भविष्य में आवश्यकता पड़ेगी। आधार नंबर के संबंध में बाली ने कहा कि इसे डिजिटल राशनकार्ड परियोजना के अंतर्गत अनिवार्य नहीं किया गया है। उन्होंने कहा कि जिन व्यक्तियों का आधार नंबर नहीं है, उन्हें इसे उपलब्ध करवाने की आवश्यकता नहीं है।

हालांकि, यदि कोई व्यक्ति बाद में आधार नंबर प्राप्त करता है, इसे डिजिटल राशनकार्ड डाटा बेस में शामिल किया जा सकता है। बाली ने कहा कि हिमाचल प्रदेश सरकार सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत नकद अनुदान के पक्ष में नहीं है। राज्य सरकार प्वांईट ऑफ सेल के कार्यान्वयन के माध्यम से उपभोक्ताओं को राशन उपलब्ध करवाने की परंपरा को जारी रखेगी। उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने राज्यों को राशन उपलब्ध करवाने अथवा नकद अनुदान उपलब्ध करवाने का विकल्प दिया है ताकि सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अंतर्गत सही लाभार्थियों को लाभ मिल सके। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश ने वित्तीय एवं तकनीकी व्यावहारिकता जिसकी जांच पड़ताल की जा रही है, के आधार पर प्वाइंट ऑफ सेल मॉडल का विकल्प अपनाया है।

धर्मशाला में भारत-पाकिस्तान मैच का विरोध तेज

हाल ही में पठानकोट एयरबेस में हुए आतंकी हमले में हिमाचल के दो जवान शहीद हुए थे। इसी दौरान भारत-पाक मैच का एलान हुआ। इस घटना के बाद शहीदों के परिजन के परिजनों ने मैच का विरोध और भी तेज कर दिया है। शहीदों के परिजनों ने निकाली तिरंगा यात्रा कहा-देवभूमि में पाक का झंडा बर्दाश्त नहीं

धर्मशाला। टी-20 वर्ल्ड कप के स्थानीय अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट मैदान में होने वाले भारत-पाक मैच का विरोध तेज हो गया है। विरोध की यह चिंगारी एडवोकेट विनय शर्मा की तिरंगा यात्रा से शुरू हुई और इसमें प्रदेश के मुख्यमंत्री और भाजपा सांसद एवं वरिष्ठ नेता शांता कुमार के साथ-साथ शहीदों के परिजन भी इसके विरोध में कूद पड़े हैं। धर्मशाला में भारत और पाकिस्तान का मैच 19 मार्च को प्रस्तावित है। हालांकि पहले तो इस विरोध को एचपीसीए अध्यक्ष अनुराग ठाकुर व उनके विरोधियों की आपसी रंजीश का तनीजा मान कर इसे गंभीरता से नहीं लिया जा रहा था, मगर जैसे ही इसमें सत्तारूढ़ कांग्रेस, पूर्व सैनिकों सहीत कुछ संगठन भी शामिल हो गए हैं, उसे देखते हुए यह मामला गंभीर हो चुका है। इस विरोध में शहीदों के परिजनों के शामिल होने से अब यह मुद्दा सिर्फ दो विरोधी पक्षों की रंजीश का नतीजा न होकर शहीदों की शान का सवाल बन गया है। मैच के विरोध में बाकायदा तिरंगा यात्रा निकाली जा रही हैं। शहीदों के परिजनों ने चेतावनी दी है कि वे किसी भी सूरत में देवभूमि में पाकिस्तान का झंडा बर्दाश्त नहीं करेंगे। भारत-पाक मैच के विरोध को चिंगारी देने वाले अधिवक्ता विनय शर्मा ने शहीद स्मारक में अनशन का एलान भी कर दिया है। वहीं सियासी फायदा होता देख इस विरोध में सत्ताधारी कांग्रेस व सरकार के साथ-साथ कांग्रेस का छात्र संगठन एनएसयूआई भी कूद पड़ा है। एनएसयूआई ने तो बाकायदा जेल भरो आंदोलन का एलान कर दिया है। भाजपा के वरिष्ठ नेता शांता कुमार भी मैच न कराने की वकालत कर चुके हैं।

मैच के विरोध में प्रदेश सरकार के मुखिया वीरभद्र सिंह के शामिल होने से इस मैच की सुरक्षा को लेकर भी सवाल उठे हैं। हालांकि मैच की सुरक्षा की जिम्मेवारी राज्य सरकार पर ही है। उधर, बीसीसीआई के सचिव और एचपीसीए अध्यक्ष अनुराग ठाकुर का कहना है कि तय शेड्यूल के अनुसार हर हाल में धर्मशाला में भारत-पाक मैच होगा। इसकी तैयारियां जोरों पर हैं। यहां खास बात यह है कि विरोध के बावजूद क्रिकेट प्रशंसकों में इस मैच को देखने का रोमांच जरा भी कम नहीं हुआ है।

अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आड़ में देश विरोधी सूर

देश की नंवर एक यूनिवर्सिटी जेएनयू में एक समारोह के बहाने राष्ट्रविरोधी नारे लगाए जाने की घटना के बाद से एक नई बहस शुरू हो चुकी है। देश के सर्वोच्च शिक्षण संस्थान के छात्रों के अलावा यहां के शिक्षकों की विचारधारा को लेकर कई तरह के सवाल उठ रहे हैं। साथ ही इस मामले पर राजनीति भी गर्म है। जहां तक राष्ट्रविरोधी नारों का सवाल है तो हमारा देश ऐसी घटनाओं को कतई बर्दाश्त नहीं कर सकता। भले ही इसके पीछे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की बात कही जा रही है, मगर शायद ही विश्व का कोई देश ऐसा होगा जहां अभिव्यक्ति की ऐसी स्वतंत्रता दी गई हो जिसमें अपने ही देश के टुकड़े करने के नारे लगाए जाते हों। खासकर यह मामला युवा शक्ति और छात्रों से जुड़ा होने के कारण और भी गंभीर कहा जा सकता है। साथ ही यह बात भी साफ होने लगी है कि हमारे राजनीतिक दल किस तरह की विचारधारा परोस कर देश के भविष्य का अपने फायदे के लिए इस्तेमाल कर रहे हैं। वैसे भी जेएनयू में शहीदों के अपमान से लेकर हिंदुओं की आराध्य मां दुर्गा तक का अपमान किया जा चुका है। अगर देश के एक बड़े विवि में इस तरह की शिक्षा व अभिव्यक्ति की आजादी सिखाई जा रही है, तो ऐसी शिक्षा से देश का कतई भला नहीं हो सकता।

ऐसी घटनाएं विभिन्न विचारधाराओं वाले देश में कोई बड़ी बात नहीं,मगर इन्हें पनपने देना बड़ी बात है। ऐसा करने वाले लोग भी मुठ्ठी भर ही हैं। इनकी संख्या के आधार पर इनको नजरअंदाज करना भी खतरनाक है। हमें यह बात भी नहीं भुलनी चाहिए कि मुठ्ठी भर लोगों की करतूत ही आगे चल कर बड़ा खतरा बन सकती है और देश का लोकतांत्रिक ढांचा खतरे में पड़ सकता है। भले ही राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के लिए जेएनयू में पहली बार गिरफ्तारी हुई हो, लेकिन अभिव्यक्ति की आजादी की आड़ में ऐसी हरकतें वहां लगातार होती रही हैं। भारत के टुकड़े करने की नारेबाजी इसकी चरम परिणति थी। सुरक्षा एजेंसियों से जुड़े अधिकारियों के अनुसार यदि पहले ऐसी गतिविधियों के खिलाफ कार्रवाई होती तो देश की बर्बादी के नारे लगाने की हिम्मत किसी में नहीं होती।

पूर्व की घटनाओं की बात करें तो 80 के दशक में जेएनयू कैंपस में पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के खिलाफ नारेबाजी को राजनीतिक विरोध मानकर भले भुला दिया जाए, लेकिन 2000 में कारगिल में लड़ने वाले वीर जवानों के साथ जो हुआ, उसे कतई भुलाया नहीं जा सकता। कारगिल युद्ध खत्म होने के बाद ही अप्रैल 2000 में जेएनयू कैंपस में भारत-पाकिस्तान मुशायरे का आयोजन किया गया था। मुशायरे का आनंद लेने कारगिल में पाकिस्तान से लड़ने वाले सेना के मेजर केके शर्मा और मेजर एलके शर्मा भी पहुंच गए।

एक पाकिस्तानी शायर की भारत विरोधी शायरी का कारगिल के दोनों हीरो ने विरोध किया। इसपर जेएनयू के छात्रों ने इनकी बुरी तरह पिटाई कर दी। अधमरी हालत में उन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। उस समय यह मुद्दा संसद में भी उठा और तत्कालीन रक्षा मंत्री जार्ज फर्नांडिस घायल मेजर को देखने अस्पताल भी गए। लेकिन छात्रसंघ और शिक्षकों के विरोध के कारण दोषी छात्रों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं हो पाई। सरकार ने एक जांच कमेटी भी बनाई, लेकिन जांच कमेटी को कभी जेएनयू कैंपस में घुसने नहीं दिया गया।

2000 की घटना के दोषियों को सजा नहीं मिलने से जेएनयू में राष्ट्रविरोधी छात्रों का हौसला और बढ़ा। हिंदू देवी-देवताओं के अपमान और महिषासुर की पूजा को नजरअंदाज करना धीरे-धीरे सत्ता को चुनौती देने का जरिया बन गया। 2010 में पूरा देश जब छत्तीसगढ़ में नक्सलियों के हाथों 76 जवानों के मारे जाने का शोक मना रहा था, तब जेएनयू में इसकी खुशी में पार्टी दी जा रही थी। अखबारों में इसकी खबर छपने के बाद भी तत्कालीन संप्रग सरकार ने कार्रवाई की जरूरत नहीं समझी। इसके बाद जेएनयू के छात्रों के सीधे नक्सलियों से संबंध के सुबूत भी मिले और गढ़चिरौली में जेएनयू के छात्र हेम मिश्रा को गिरफ्तार किया गया। लेकिन हेम मिश्रा के साथी छात्रों के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की गई। पुलिस की जांच से साफ हो गया है कि भारत की बर्बादी के लिए कार्यक्रम आयोजित करने की साजिश रचने वाला छात्र भी हेम मिश्रा की तरह उसी छात्र संघ का सदस्य है, जो इस तरह के देश विरोधी कार्यक्रम आयोजित करता आ रहा है। पुलिस इस मामले में इस राष्ट्र विरोधी छात्रसंघ से जुड़े 10 छात्रों की तलाश कर रही है। सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार यह छात्र संगठन नक्सलियों का फ्रंट संगठन है।

फिलहाल इस मामले में जो राजनीति हो रही है, उससे राजनीतिक पार्टियों की देश की अखंडता व प्रभूता को बचाने के बजाय अपना वोट बैंक साधने की ललक ज्यादा नजर आ रही है। जहां ऐसी घटनाओं की एकजुट होकर निंदा करने और ऐसा करने वालों के हौसले पस्त करने की जरूरत होती है, वहीं विपक्षी दलों ने सत्ताधारी दल व उसकी विचारधारा को ही निशाना बनाना शुरू कर दिया है। हालांकि लोकतंत्र में हर दल को विरोधी दल की नकारात्मक भूमिका की अलोचना करने और खुलेआम बहस करने का हक है, मगर जब बात देशहित की हो तो इस पर की जाने वाली राजनीति खुद के साथ-साथ देश के लिए हानिकारक सिद्ध होती है।

भारत विरोधी प्रदर्शन करने पर हो कार्रवाई

शिमला। भाजपा प्रदेशाध्यक्ष सतपाल सिंह सत्ती ने जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय में एसएफ आई की ओर से संसद हमले के मुख्य दोषी अफ जल गुरु के पक्ष में किए गए भारत विरोधी प्रदर्शन की कड़ी निंदा की है। उन्होंने कहा कि भारत विरोधी प्रदर्शन में शामिल व्यक्तियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई कर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा दर्ज किया जाना चाहिए, ताकि देश की अखंडता के खिलाफ षड्यंत्र रचने वाले अलगाववादियों को कड़ा संदेश मिल सके।

भाजपा अध्यक्ष ने कहा कि अभिव्यक्ति की आजादी के नाम पर एक विशेष विचारधारा के लोग देश तोड़ने में लगे हुए हैं। 1971 के युद्ध के समय इसी विचारधारा के लोगों ने चीन के भारत पर आक्रमण का स्वागत किया, लेकिन 1989 में लोकतंत्र की लड़ाई लड़ रहे हजारों विद्यार्थियों को तिनानमिन चौक पर सरेआम टैंकों से उड़ाया गया, तब देश में अभिव्यक्ति की आजादी के पैरोकार चुप बैठे थे, लेकिन आज संसद पर हमले के मुख्य दोषी के समर्थन में इसी विचारधारा के लोग भारत के झंडे जला रहे हैं और भारत विरोधी नारे लगा रहे है। आज सभी तथाकथित सेकुलर पार्टियों के नेता इतनी बड़ी घटना के बाद भी चुप बैठे हैं। जाति की राजनीति के नाम पर कांग्रेस के नेता दादरी और हैदराबाद तो जा सकते हैं पर राष्ट्र विरोधी तत्वों के खिलाफ कोई भी कार्रवाई करने पर इन नेताओं के मुंह बंद हो जाते हैं।

जवाहर लाल नेहरू विवि परिसर में एसएफआई के प्रदर्शन से भाजपा लाल एसएफआई ने अफजल गुरु के पक्ष में किया है प्रदर्शन

घमंडी कौवा

हंसों का एक झुण्ड समुद्र तट के ऊपर से गुज़र रहा था ए उसी जगह एक कौवा भी मौज मस्ती कर रहा था । उसने हंसों को उपेक्षा भरी नज़रों से देखा ''तुम लोग कितनी अच्छी उड़ान भर लेते हो !'' कौवा मज़ाक के लहजे में बोला, ''तुम लोग और कर ही क्या सकते हो बस अपना पंख फड़फड़ा कर उड़ान भर सकते हो !!! क्या तुम मेरी तरह फूर्ती से उड़ सकते हो??? मेरी तरह हवा में कलाबाजियां दिखा सकते हो ???.... नहीं, तुम तो ठीक से जानते भी नहीं कि उड़ना किसे कहते हैं !''

कौवे की बात सुनकर एक वृद्ध हंस बोला, ''ये अच्छी बात है कि तुम ये सब कर लेते हो, लेकिन तुम्हे इस बात पर घमंड नहीं करना चाहिए ।''

''मैं घमंड दृ वमंड नहीं जानता ए अगर तुम में से कोई भी मेरा मुकाबला कर सकत है तो सामने आये और मुझे हरा कर दिखाए।''

एक युवा नर हंस ने कौवे की चुनौती स्वीकार कर ली। यह तय हुआ कि प्रतियोगिता दो चरणों में होगी , पहले चरण में कौवा अपने करतब दिखायेगा और हंस को भी वही करके दिखाना होगा और दूसरे चरण में कौवे को हंस के करतब दोहराने होंगे ।

प्रतियोगिता शुरू हुई, पहले चरण की शुरुआत कौवे ने की और एक से बढ़कर एक कलाबजिया दिखाने लगा, वह कभी गोल-गोल चक्कर खाता तो कभी ज़मीन छूते हुए ऊपर उड़ जाता, वहीं हंस उसके मुकाबले कुछ ख़ास नहीं कर पाया। कौवा अब और भी बढ़-चढ़ कर बोलने लगा, ''मैं तो पहले ही कह रहा था कि तुम लोगों को और कुछ भी नहीं आता ....ही ही ही ....''

फिर दूसरा चरण शुरू हुआ, हंस ने उड़ान भरी और समुद्र की तरफ उड़ने लगा कौवा भी उसके पीछे हो लिया ''ये कौन सा कमाल दिखा रहे हो ए भला सीधे-सीधे उड़ना भी कोई चुनौती है??? सच में तुम मूर्ख हो।'' कौवा बोला ।

पर हंस ने कोई ज़वाब नही दिया और चुप-चाप उड़ता रहा। धीर-धीरे वे ज़मीन से बहुत दूर होते गए और कौवे का बडबडाना भी कम होता गया, और कुछ देर में बिलकुल ही बंद हो गया, कौवा अब बुरी तरह थक चुका था, इतना कि अब उसके लिए खुद को हवा में रखना भी मुश्किल हो रहा था और वो बार-बार पानी के करीब पहुच जा रहा था। हंस कौवे की स्थिति समझ रहा था, पर उसने अनजान बनते हुए कहा ''तुम बार-बार पानी क्यों छू रहे हो, क्या ये भी तुम्हारा कोई करतब है ?''

''नहीं '' कौवा बोला ''मुझे माफ़ कर दो, मैं अब बिलकुल थक चूका हूँ और यदि तुमने मेरी मदद नहीं की तो मैं यहीं दम तोड़ दूंगा ... मुझे बचा लो मैं कभी घमंड नहीं दिखाऊंगा ...''

हंस को कौवे पर दया आ गयीए उसने सोचा कि चलो कौवा सबक तो सीख ही चुका है, अब उसकी जान बचाना ही ठीक होगा। और वह कौवे को अपने पीठ पर बैठा कर वापस तट की और उड़ चला ।

दोस्तो, हमे इस बात को समझना चाहिए कि भले हमें पता ना हो पर हर किसी में कुछ न कुछ quality होती है जो उसे विशेष बनाती है। और भले ही हमारे अन्दर हज़ारों अच्छाईयां हों, पर यदि हम उसपे घमंड करते हैं तो देर-सबेर हमें भी कौवे की तरह शर्मिंदा होना पड़ता है। एक पुरानी कहावत भी है, ''घमंडी का सर हमेशा नीचा होता है।'' इसलिए ध्यान रखिये कि कहीं जाने -अनजाने आप भी कौवे वाली गलती तो नहीं कर रहे ।

बडे-बडे दिग्गज बह जायेंगे। छोटे-मोटे की तो बात ही क्या है! तुम लोग कमर कसकर कार्य में जुट जाओ, हुंकार मात्र से हम दुनिया को पलट देंगे। अभी तो केवल मात्र प्रारम्भ ही है। किसी के साथ विवाद न कर हिल-मिलकर अग्रसर हो .. यह दुनिया भयानक है, किसी पर विश्वास नहीं है। डरने का कोई कारण नहीं है, माँ मेरे साथ हैं .. इस बार ऐसे कार्य होंगे कि तुम चकित हो जाओगे। भय किस बात का ? किसका भय ? वज्र जैसा हृदय बनाकर कार्य में जुट जाओ।

स्वामी विवेकानन्द

ऑनलाइन कारोबार पर कर वसूली को बनेगी नीति

मंडी। बल्ह के विधायक व आबकारी एवं कराधान मंत्री प्रकाश चौधरी ने कहा है कि अब ऑन लाईन खरीद फरोखत पर सरकार पैनी नजर रखेगी। प्रदेश में ऑन लाईन कारोबार के तेजी से फैलने के बावजूद सरकार को कोई भी राजस्व लाभ प्राप्त नहीं हो रहा है। यह बात उन्होंने बल्ह के पत्रकारों के साथ एक प्रेसवार्ता में कही। उन्होंने कहा कि इससे प्रदेश सरकार को करोड़ों रूपये के राजस्व की चपत लग रही है। इसके लिए सरकार शीघ्र ही एक उचित कदम उठाने जा रही है। कोरियर के माध्यम से जो सामान अन्य राज्यों से प्रदेश में आता है उस पर सरकार कर वसूलेगी। साथ ही यह भी कहा कि बल्ह में एसडीएम कार्यालय की सुविधा जनता के लिए शीघ्र ही उपलब्ध होगी, जिससे जनता अपना कार्य सरलता से निपटा सकेगी।

भरे पूरे परिवार को मुसीबत में डाल गया एचआईवी वायरस

सफलता की कहानी

- शादी के 11 साल बाद अचानक पति की मौत ने खोला राज
- जांच हुई तो पता चला कि पारुल व उसके दोनों बच्चे भी हैं संक्रमित
- समाज ने मुंह फेरा मगर हिम्मत व मेहनत से बचाया परिवार

मेरा नाम पारुल (काल्पनिक नाम) है। मैं हमीरपुर की रहने वाली हूं। जिंदगी का कुछ पता नहीं होता कब क्या से क्या हो जाए। ऐसा ही कुछ मेरे साथ भी घटित हुआ। मेरी जिंदगी में खुशियां आईं तो जरुर थीं, लेकिन कब गम में बदल गईं इसका पता हीं नहीं चला। मेरी जिंदगी में दो मुसिबतें समंदर में उठने वाली ऊची लहरों की तरह इस कदर आईं कि वे मेरे सुखी संसार को अपने साथ बहा कर ले गईं। हालत यह बन गई कि मेरे जीवन का कोई महत्व नहीं रह गया था। पारुल अपनी जींदगी की कड़ी यादों को याद करते हुए बताती हैं कि वर्ष 1993 में उसकी शादी के साथ ही उसके नये जीवन की शुरुआत हुई। नया परिवार नये लोग सामने थे। हर एक लड़की का सपना होता है कि उसका पति स्वस्थ और दिखने में सुंदर हो। ठीक उसी प्रकार पारुल का के भी कुछ सपने थे। शादी के चार साल बाद उसके दो बच्चें हो चुके थे। बच्चों व भरे पूरे परिवार के साथ उसका जीवन खुशी खुशी चल रहा था।

कुछ दिनों बाद ना जाने उसके हंसते खेलते परिवार को किसकी नजर लग गई। पारुल के पति अचानक बिमार पड़ गए। काफी इलाज होने के बाद भी उनके स्वास्थय में कोई सुधार नहीं हो पा रहा था। हालत खराब होते देख उनको आईजेएमसी अस्पताल शिमला में भरती करवाया गया। वर्ष 2002 में तीन दिन अस्पताल में रहने के बाद आखिरकार उनकी मौत हो गई। पारुल के पति की मौत कोई सामान्य नहीं थी, उन्हें कुछ ऐसी बीमारी ने घेर लिया था, जो उनकी जान लेकर रही।

यह समय उसके लिये किसी बुरे सपने से कम नहीं था। उसकी सारी खुशियां पलभर में दुख में बदल गईं थीं। पारुल पूरी तरह से जिंदगी की जंग हार चुकी थी। लेकिन समय किसी के लिये नहीं रुकता। आगे पूरी जिंदगी और दो बच्चें की परवरिश की जिम्मेवारी थी। उसने अपने आप को संभाला। पति की मौत का कारण पता चला तो उसकी सांसें थम गईं। उसे एचआईवी संक्रमण था। ठीक समय पर बिमारी का पता ना चलने और इलाज ना होने के कारण उनकी मौत हुई थी। पारूल कहती हैं कि काश उनकी इस घातक बिमारी का समय पर पता चला होता तो उनके पति आज उनके साथ होते। इस बात से सबब लेते हुए उसने भी अपना एचआईवी टैस्ट करवाया। टैस्ट रिपोर्ट आई तो वह भी झकझोरने वाली थी, इसमें पारुल भी एचआईवी पॉजटीव पाई गईं। इतने पर भी उनके दुखों का अंत नहीं हुआ, बच्चों की जांच करवाई गई तो वे भी एचआईवी की चपेट में पाए गए। पति की मौत से टूट चुकी पारुल के लिए यह जानकारी किसी मौत से कम नहीं थी।

पारुल कहती हैं कि वह तो भगवान से यहीं दुआ करेंगी कि ऐसे दिन किसी को ना दिखाये। उनके बच्चों का हौसला भी गिर चुका था। इस बात की भनक लगते ही समाज ने भी उनसे किनारा कर लिया था। आसपास के लोगों ने उससे बात करना बंद कर दिया था। ऐसी परिस्थितियों के बीच कैसे ना कैसे उसे अपना व बच्चों के पेट के लिये काम-काज तो करना ही पड़ना था। पारुल को इस बात का भी दुख है कि लोग उसके बारे में उल्टी सीधी बाते भी बनाने लगे थे। इन सब बातों को झेलते हुए वह खेती बाड़ी करने लगी। लोग उसे देख कहने लगे कि अब ये परिवार ज्यादा दिनों तक जीवित नहीं रह पाएगा।

पारुल ने उनकी बातों को अनसुना करते हुए अपने काम में ध्यान दिया। वह मेहनत करती गई और हिम्मत नहीं हारी।

हालांकि पारुल बताती है कि यह समय उसके लिये किसी बुरे सपने से कम नहीं था। लेकिन अब उसका बुरा समय समाप्त हो गया है। सही परामर्श व इलाज के चलते अब उसका पूरा परिवार स्वस्थ है। पारुल बताती है कि वर्ष 2010 में वह गुंजन संस्था द्वारा चलाये जा रहे पीपीटीसीटी प्रोजेक्ट के साथ जुड़ीं। इसके बाद उसके आत्मविश्ववास में बढ़ोतरी हुई। उसका बेटा जो अपाहिज है, दुकान चला रहा है। उसने अपनी बेटी की भी शादी कर दी है। आज वह अपने खुशहाल परिवार के साथ एचआईवी पीड़ित लोंगों को जीवन की नई राह दिखा रही है। उसने बताया कि आज समाज को कुछ एसे ही लोगों की जरुरत है जो दूसरों के लिये जीने की प्रेरण का स्त्रोत बनें। ऐसा ही बनना उसका ध्येय है।

एचआईवी/एड्स से निपटने के लिए जरूरी टूल्स टुगेदर नाऊ!

4. समूह विश्लेषण एवं सीख

जब लोग और संगठन मिलजुल कर काम करते हैं, तभी स्थिति की एक मुकम्मल समझ पैदा हो सकती है और सबसे बड़ी कार्रवाई की जा सकती है। स्थिति की पूरी जटिलता को तभी समझा जा सकता है, जब लोग समूह के रूप में एचआईवी/एड्स के विषय में अपने ज्ञान और अनुभवों का आदान-प्रदान करते हैं। तभी सहभागी यह भी देख सकते हैं कि उनके ज्ञान व अनुभवों में कितनी विविधता है तथा उनके बीच क्या समानताएं हैं। सामूहिक विश्लेषण से एचआईवी/एड्स पर बहस-मुबाहिसा शुरू होता है जिससे समूह को इस बारे में कार्रवाई करने की ओर ठोस प्रेरणा मिलती है।

5. दृश्य एवं मौखिक तकनीकों का मिश्रण

रेखाचित्रों, चित्रों और साझा अनुभवों के जरिए सभी लोगों को जटिल विश्लेषण तथा सीखने की प्रक्रिया में समान रूप से हिस्सा मिलता है। दृश्य टूल्स का इस्तेमाल करने से लोगों को विश्लेषण व नियोजन में सुविधा के अनुसार हिस्सेदारी का मौका मिलता है। ऐसे टूल्स से लोगों को उम्र, जेंडर, संस्कृति, साक्षरता, सामाजिक या आर्थिक स्तर आदि से परे हटकर जटिल विश्लेषण करने में मदद मिलती है। लोग अपनी सुविधा अनुसार खुद को अभिव्यक्त कर सकें, इसके लिए पीएलए में मंचन कलाओं का भी इस्तेमाल किया जाता है। ड्रामा और रोल प्ले, दोनों के साथ सवाल-जवाब व फेसिलिटेशन की प्रक्रिया भी चलती रहती है।

6. अनुसनी आवाजें की तलाश

कई बार कुछ लोग फैसलों में अपनी राय देना नहीं चाहते। इसमें कोई समस्या नहीं है, लेकिन कई बार लोग चाहे-अनचाहे उस निर्णय प्रक्रिया से बेदखल हो जाते हैं, जो उनको प्रभावित करने वाली है। ऐसा उम्र, लिंग, यौनिकता, एचआईवी स्थिति, वर्ग, जाति, कम साक्षरता, सामाजिक व आर्थिक स्थिति के कारण हो सकता है। लोगों की सहभागिता सुनिश्चित करने के लिए इन सारी बातों को ध्यान में रखना चाहिए। अकसर देखा गया है कि जो लोग एचआईवी/एड्स से पीड़ित हैं या जिनके सामने इसकी आशंका ज्यादा है, उन्हीं का इन फैसलों में सबसे कम हिस्सा रहता है। पीएलए का एक सिद्धांत यह है कि यदि कोई व्यक्ति एचआईवी/एड्स से प्रभावित है या उसकी आशंका में है और फैसलों में हिस्सा लेना चाहता है तो उसे यह अधिकार जरूर मिलना चाहिए। जो लोग फेसिलिटेट करते हैं, उन्हें इस बात का पता लगाना चाहिए कि ऐसे कौन लोग हैं, जो इसमें हिस्सा लेना चाहते हैं, मगर उन्हें रोका जा रहा है।

7. सही सोच और व्यवहार का महत्व

एचआईवी एड्स प्रयासों में सभी प्रभावितों की सक्रिया और प्रभावशाली हिस्सेदारी सुनिश्चित करने के लिए पीएलए फेसिलिटेटर्स का रवैया/सोच और व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि वे लोगों को बेदखल करने की बजाय उन्हें प्रक्रिया में शामल कर सकें। यहां सिर्फ यही काफी नहीं है कि कार्रवाइयों में हाशियाई या बेदखल तबकों को शामिल कर लिया जाए। इससे भी ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि हम उन्हें किस तरह शामिल करते हैं।

पीएलए के लिए एक फेसिलिटेटर की जरूरत होती है। इस भाग में पीएलए को फेसिलिटेट करने के लिए जरूरी ज्ञान, निपुणता, सोच/रवैये और व्यवहारों के बारे में जानकारी दी गई है। इसमें बताया गया है कि कौन लोग पीएलए फेसिलिटेटर बन सकते हैं और फेसिलिटेटर की भूमिका क्या होती है। यहां यह भी बताया गया है कि इस टूलकिट में कौन से पीएलए टूल दिए गए हैं और इनका इस्तेमाल कैसे किया जाएगा। पीएलए को फेसिलिटेट करने के लिए जरूरी निपुणताओं के बारे में भी चर्चाएं की गई हैं। गौर से सुनना, सही मौके पर सवाल पूछना और सामूहिक चर्चाओं को फेसिलिटेट करना फेसिलिटेटर के लिए काफी अहम बातें हैं। पीएलए फेसिलिटेटर के लिए सही रवैये और व्यवहार की भी पड़ताल की गई है।

पीएलए फेसिलिटेटर कौन हो सकता है ..... पढ़े भाग - 7 में

आई.ई.सी. मेटिरियल डिवेलप्मेंट - पोस्टर श्रृंखला

दुनिया की आधी आबादी की आंखें खतरे में

आने वाले तीन दशकों में दुनिया की आधी आबादी दृष्टिदोष का शिकार हो जाएगी। ताजा अध्ययन के मुताबिक 2050 तक पांच अरब लोग आंखों की समस्या से ग्रस्त होंगे। मौजूदा प्रवृत्ति जारी रहने पर हर पांच में एक के दृष्टिहीन होने का भी खतरा है।

ऑस्ट्रेलिया और सिंगापुर के वैज्ञानिकों के साझा शोध में यह बात सामने आई है। इस शोध में भारतीय मूल के एक शोधकर्ता भी शामिल हैं। वर्ष 2000 से 2050 के बीच निकट दृष्टिदोष के चलते स्थायी दृष्टिहीनता में सात गुना की वृद्धि की आशंका है। इसमें दूर की वस्तु स्पष्ट नहीं दिखती। लोगों की जीवनशैली और पर्यावरण में आमूलचूल बदलाव के चलते निकट दृष्टिदोष के मामलों में वृद्धि होगी।

इसके अलावा कंप्यूटर और स्मार्टफोन के ज्यादा इस्तेमाल का भी नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। प्रोफेसर कोविन नायडू ने बताया, इस समस्या को कम करने के लिए बच्चों के आंखों की नियमित जांच जरूरी है। इससे समय रहते ही जरूरी कदम उठाए जा सकेगा।

परीक्षा की अच्छी तैयारी को आजमाएं ये टिप्स

शोर से बचें : ये सबसे जाना-बूझा सच है कि शोर, आवाजें आपका ध्यान भटकाते हैं, आपकी एकाग्रता कम करते हैं। बाहरी शोर से निबटने के लिए जरूरी है कि पढ़ने के लिए एकांत कोना चुने, शांत वक्त चुनें। लेकिन इन कुछ सालों में गैजेट्स ने भी एकाग्रता को भंग करने में बड़ी भूमिका निभाई है। ई-मेल अलर्ट या फिर वॉट्स एप मैसेजेस हो कि फेसबुक-ट्विटर का चस्का। ये सब बच्चे की एकाग्रता को नुकसान पहुंचाते हैं। इसके लिए जरूरी है कि आप अपने मोबाइल फोन्स, टेबलेट्स और लैपटॉप्स से दूरी बनाकर रखें।

जगह का चुनाव : पढ़ाई करने के लिए आपने कौन-सी जगह चुनी है, ये भी बहुत महत्वपूर्ण हैं। ऐसी जगह जहां ध्यान भटकने की गुंजाइश ज्यादा हो, वहां कांसंट्रेट होना एक बड़ी चुनौती है। खिड़की या फिर दरवाजे के पास बैठकर पढ़ने, गैलरी या छत पर पढ़ने से पढाई पर ध्यान लगाना जरा मुश्किल हो जाता है। इसी तरह फोन, टीवी के आसपास भी यदि पढ़ने की कोशिश होगी तो ध्यान भटकने की आशंका होगी। इसलिए पढ़ने के लिए घर का सबसे पिछला हिस्सा हो, आपकी आंखों के सामने खिड़की या कोई दरवाजा न हो।

लक्ष्य पर हो ध्यान : पढ़ाई शुरू करने से पहले यह तय कर लें कि इस सीटिंग में आपका लक्ष्य क्या होगा? क्योंकि यदि आपने ये तय नहीं किया है तो फोकस करने में मुश्किल आ सकती है। क्योंकि आप जो भी काम करना शुरू करते हैं उसके लिए आपको एक खाका तो बनाना ही पड़ेगा, तभी आप उस बारे में स्पष्ट हो सकेंगे। अस्पष्ट लक्ष्य अंतत: आपको भटकाएगा ही। इसलिए एक सैशन की सीटिंग में आप कितना और क्या पढ़ेंगे ये पहले तय कर लें।

रोडमैप तैयार करें : बड़ा सिलेबस हो और कोई योजना नहीं हो तो भटकने की आशंका बढ़ जाती है। यदि बहुत सारा पढ़ना है तो स्पष्टता रखनी बहुत जरूरी है। इसके लिए योजनाबद्ध तरीके से पढ़ाई करनी होगी। छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित करें, ताकि लक्ष्य हासिल करने में आसानी हो। कितना और कैसे पढ़ना है, इसका खाका पढ़ाई शुरू करने से पहले ही तैयार कर लें।

समय सीमा तय करें : जिस तरह लक्ष्य तय किए जाते हैं उसी तरह समय तय करने की भी जरूरत है। ताकि ये तय हो जाए कि कितने वक्त में तयशुदा लक्ष्य पूरा किया जा सकता है। इससे एकाग्र होने में आसानी रहती है। जैसे कितने चैप्टर एक सप्ताह में पूरे करने हैं और कितने वक्त में आप एक चैप्टर पूरा कर पाएंगें।

एकांत में रहें : ऐसा होता है कि कुछ बच्चे ग्रुप स्टडी पसंद करते हैं, लेकिन अच्छे रिजल्ट के लिए कुछ वक्त एकांत में रहें। कई बार बहुत सारे दोस्तों के साथ पढ़ने में एकाग्रता भंग होने का खतरा बना रहता है। आप जितनी एकाग्रता से अपने चैप्टर को पढ़ेंगे उतना ही जल्दी उसे समझेंगे भी और उतनी ही जल्दी वो आपको समझ में भी आएगा।

प्राइवेट बैंकों में जॉब, ऐसे पाएं एंट्री

हमारे यहां बैंकिंग सेक्टर में लंबे समय तक पब्लिक सेक्टर बैंक ही हावी रहे हैं मगर अब प्राइवेट सेक्टर बैंक भी पीछे नहीं रहे। देश के फाइनेंशियल मार्केट को ये बढ़-चढ़कर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। देश के आर्थिक विकास में भी ये अपनी भूमिका बखूबी निभा रहे हैं। ये विभिन्न ग्राहक समूहों को हर तरह की वित्तीय सेवाएं उपलब्ध करा रहे हैं। दरअसल, आज प्राइवेट सेक्टर बैंक, पब्लिक सेक्टर बैंकों के मुकाबले अधिक रफ्तार से आगे बढ़ रहे हैं। अपनी बेहतर कस्टमर सर्विस और व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा करने वाली स्कीम्स के चलते कई देशी व विदेशी प्राइवेट बैंकों ने देश के फाइनेंशियल मार्केट में अपनी खास जगह बना ली है। नतीजा यह कि आज प्राइवेट बैंक कई छोटे-बड़े ग्राहकों की पहली पसंद बन गए हैं।

कैसे होती हैं नियुक्तियां

आज बड़ी संख्या में युवा प्राइवेट बैंकों में करियर बनाने का लक्ष्य लेकर चलते हैं। कारण यह कि यहां का पे-स्ट्रक्चर बहुत आकर्षक होता है और पब्लिक सेक्टर बैंकों के मुकाबले प्रतिस्पर्धा आसान होती है। प्राइवेट सेक्टर बैंकों में विभिन्न पदों पर जॉब उपलब्ध होते हैं। पब्लिक सेक्टर बैंकों की ही तरह अधिकांश प्राइवेट बैंक भी लिखित परीक्षा और पर्सनल इंटरव्यू के माध्यम से भर्तियां करते हैं। फर्क है परीक्षा के पैमाने का। यहां पब्लिक सेक्टर बैंकों के मुकाबले छोटे पैमाने पर परीक्षा होती है। यह परीक्षा अलग-अलग बैंकों द्वारा आयोजित की जाती है।

जॉब प्रोफाइल

प्राइवेट बैंकों में विभिन्न जॉब प्रोफाइल उपलब्ध हैं, जैसे रिलेशनशिप मैनेजर, असिस्टेंट मैनेजर, इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी ऑफिसर, सिक्योरिटी मैनेजर, लॉ एग्जीक्यूटिव, एचआर मैनेजर, ब्रांच मैनेजर, बिजनेस डेवलपमेंट मैनेजर, टैलर आदि। इन पदों पर नियुक्ति के लिए उम्मीदवार के पास विभिन्न डिग्रियां होना जरूरी है, जैसे एमबीए, सीए, ग्रेजुएशन, पोस्ट ग्रेजुएशन, आईसीडब्ल्यूए आदि। कुछ रिक्तियों के लिए फ्रैशर भी आवेदन कर सकते हैं। इनके बारे में अलग-अलग बैंकों की वेबसाइट से जानकारी प्राप्त की जा सकती है। वैसे भी, प्राइवेट बैंकों में जॉब पाने के इच्छुक युवाओं को ऐसे बैंकों की वेबसाइट पर लगातार नजर रखनी चाहिए।

बैंक द्वारा जारी आधिकारिक नोटिफिकेशन को पढ़कर आपको परीक्षा के पैटर्न, सिलेबस, योग्यता, जॉब प्रोफाइल आदि के बारे में अधिक स्पष्ट जानकारी मिल सकती है। जिन उम्मीदवारों की हायर सेकेंडरी व ग्रेजुएशन स्तर पर कॉमर्स, फाइनेंस या इकोनॉमिक्स की पृष्ठभूमि रही है, उन्हें प्राइवेट बैंकों में वरीयता दी जाती है। साथ ही, यहां कम्प्यूटर स्किल्स एक तरह से अनिवार्य ही हैं।

इंटरव्यू की भूमिका

अगर आप प्राइवेट बैंकों में अपना करियर बनाना चाहते हैं, तो यह समझ लेना जरूरी है कि ये बैंक ऐसे ओजस्वी और प्रतिभाशाली युवाओं की तलाश में रहते हैं, जिनकी दृष्टि भविष्य की ओर उन्मुख हो और जो पूरी तरह से बैंक का बिजनेस बढ़ाने के प्रति समर्पित हों। नियुक्ति प्रक्रिया में पर्सनल इंटरव्यू के दौरान उम्मीदवारों में यही गुण तलाशा जाता है। इंटरव्यू बोर्ड के सामने आपको पूरे आत्मविश्वास के साथ खुद को पेश करना होता है। आपको इंटरव्यू बोर्ड को आश्वस्त करना होता है कि आप बैंक का चेहरा बनने में पूरी तरह से सक्षम हैं। ध्यान रहे, ग्राहकों के साथ कुशलता से डील करने, बैंक के उत्पादों की बिक्री बढ़ाने, क्रॉस सेलिंग आदि के गुण उम्मीदवारों में प्रमुखता से तलाशे जाते हैं।

बैंकिंग कोर्स

जो युवा प्राइवेट बैंकों में जॉब पाना चाहते हैं, वे आवेदन करने से पहले किसी प्रतिष्ठित संस्थान से बैंकिंग स्टडीज का कोई कोर्स भी कर सकते हैं। ऐसे कई कोर्स उपलब्ध हैं। हालांकि ये कोर्स प्राइवेट बैंक में जॉब दिलाने की कोई गारंटी नहीं देते मगर इनसे बैंकिंग सेक्टर और उसकी कार्यप्रणाली के बारे में आपके ज्ञान का विस्तार हो सकता है, जो लाभदायक ही होगा।

ट्वेंटी-20 विश्व कप से हट सकता है पाकिस्तान

पाकिस्तानी टीम को यदि उनकी सरकार से भारत जाने के लिए सुरक्षा क्लियरेंस नहीं मिला तो वह विश्व कप में नहीं खेल सकता है क्योंकि आईसीसी की उसके मैचों को तटस्थ स्थलों पर आयोजित करने की योजना नहीं है।

अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काउंसिल (आईसीसी) की बैठक में शामिल एक भारतीय प्रशासक ने बताया कि ऐसी स्थिति में 8 मार्च से होने वाले इस टूर्नामेंट में किसी अन्य टीम को प्रवेश दिया जा सकता है। आईसीसी की बैठक में पाकिस्तान क्रिकेट बोर्ड (पीसीबी) के प्रमुख शहरयार खान ने सूचित किया था कि उनकी टीम की हिस्सेदारी सरकार की अनुमति पर निर्भर है। इस मामले में इसके बाद अन्य कोई विचार-विमर्श नहीं हुआ।

मीडिया में शहरयार खान के हवाले से कुछ रिपोर्ट्स प्रकाशित हुई थी जिसमें यह कहा गया कि पाकिस्तान के मुकाबले तटस्थ स्थलों पर आयोजित किए जा सकते हैं। सुरक्षा कारणों से नवाज शरीफ सरकार पाकिस्तान की टीम को भारत नहीं भेजने का निर्णय ले सकती है।

हिंदुस्तान टाइम्स की रिपोर्ट के अनुसार आईसीसी द्वारा इस मामले में कमेंट करने से इनकार करने के बाद पाकिस्तान की पुरुष तथा महिला टीमों की विश्व कप में हिस्सेदारी पर प्रश्न चिन्ह लग गया है। आयोजन समिति के एक सदस्य ने बताया कि उन्हें आईसीसी या पीसीबी की तरफ से अभी तक ऐसी कोई सूचना नहीं मिली है कि पाकिस्तान की टीम विश्व कप में हिस्सा नहीं लेगी।

पाकिस्तान के लीग मैच कोलकाता, धर्मशाला और मोहाली में होना है। सेमीफाइनल मुंबई और दिल्ली में होने है और यदि पाकिस्तान अंतिम चार में पहुंचता है तो उसका सेमीफाइनल मुकाबला दिल्ली में कराया जाना है।

संपादक व प्रकाशक संदीप परमार द्वारा वीपीओ सिद्धबाड़ी, तहसील धर्मशाला, जिला कांगड़ा-176057, हि.प्र. से प्रकाशित व संपादित और बज्रेश्वरी प्रिंटर्स वीपीओ घरोह, तहसील धर्मशाला, जिला कांगड़ा हिप्र. से मुद्रित। फोन नंबर: 01892-235315 Mail ID: badaltirahain@gmail.com